भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी गतिविधियां

प्रिन्स कुमार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी गतिविधियां

लेखक: प्रिन्स कुमार
यूजीसी-नेट-जेआरएफ, इतिहास

Published By

World Academic Press, Kolkata-700126, India

www.worldacademic.press

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी गतिविधियां

© 2026 प्रिन्स कुमार
प्रकाशक:
World Academic Press, Kolkata-700126, India
DOI:
https://www.doi.org/10.66727/wap.9788168686182

लाइसेंस (License):

यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है। इस लाइसेंस की एक प्रति देखने के लिए, कृपया https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/ पर जाएँ।
यह पुस्तक समय, ध्यान और विचारशील प्रयास का परिणाम है। इसका उद्देश्य इस क्षेत्र में ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए इसे पढ़ना, इस पर विचार करना और इसका उपयोग करना है। CC BY 4.0 लाइसेंस के तहत, आप किसी भी उद्देश्य के लिए इस सामग्री को साझा करने (वितरित करने) और अनुकूलित करने (बदलाव करने) के लिए स्वतंत्र हैं, बशर्ते लेखकों को उचित श्रेय (credit) दिया गया हो।

अस्वीकरण (Disclaimer):

लेखकों और प्रकाशक द्वारा सटीक, विश्वसनीय और जिम्मेदारीपूर्वक शोध की गई जानकारी प्रस्तुत करने का हर संभव प्रयास किया गया है। यह कार्य पूरी सद्भावना के साथ प्रस्तुत किया गया है, इस उम्मीद के साथ कि यह पाठकों को जानकारी देगा, प्रेरित करेगा और विचारशील विमर्श को आमंत्रित करेगा।

ISBN: 978-81-686861-8-2

प्रथम संस्करण: 2026

लेखक परिचय

प्रिन्स कुमार एक वरिष्ठ शोधकर्ता और इतिहासकार हैं। उन्होंने इतिहास विषय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की प्रतिष्ठित नेट-जेआरएफ (UGC NET-JRF) फेलोशिप प्राप्त की है। वर्तमान में वे बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से इतिहास में शोध (Ph.D.) कर रहे हैं। बहुआयामी शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले प्रिन्स कुमार ने इतिहास के साथ-साथ ग्रामीण विकास और गांधी एवं शांति अध्ययन में भी स्नातकोत्तर (M.A.) की उपाधि प्राप्त की है।

इनका मुख्य शोध कार्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन गुमनाम क्रांतिकारियों को खोजकर समाज के सामने लाना है, जिन्हें इतिहास में उचित स्थान नहीं मिल सका। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने राष्ट्रीय अभिलेखागार (नई दिल्ली), कलकत्ता अभिलेखागार और बिहार राज्य अभिलेखागार के मूल दस्तावेजों का गहन अध्ययन किया है ।प्रिन्स कुमार के अनेक शोध-पत्र UGC-CARE सूचीबद्ध तथा अन्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे 'रिसर्च जर्नल ऑफ मीमांसा' के संपादक मंडल के सदस्य भी हैं। शिक्षा और शोध के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 'विश्व हिन्दी परिषद' (2023) द्वारा सम्मानित किया गया है , साथ ही उन्हें 'सरस्वती शोधार्थी गौरव सम्मान-2025' और 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से भी अलंकृत किया गया है।

विषय-सूची

18 वीं शताब्दी के क्षेत्रीय, जातीय व सैनिक विद्रोह: 13
"सार्वजनिक विद्रोह" (संघबद्ध विद्रोह): 14
(1) वहावी विद्रोह (प्रथम संघबद्ध विद्रोह): 14
(2) 1857 का विद्रोह : 14
पुनर्जागरण के अग्रदूत राजाराम मोहनराय : 16
स्वामी दयानन्द सरस्वती : 16
स्वामी विवेकानन्द : 18

क्रान्ति का अर्थ है सतत् परिवर्तनयुक्त गतिशीलता। परिवर्तन शब्द भौतिक भी हैं और वैचारिक भी क्रान्ति न केवल भौतिक परिवेश, बल्कि राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था परिवर्तन का भी माध्यम होती है। विश्व में परिवर्तन की क्रान्ति का क्रम चलता रहता है। जहाँ तक भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारी आन्दोलन का सम्बन्ध है, उसका अपना सुनिश्चित निहितार्थ है। इस सन्दर्भ में क्रान्तिकारी आन्दोलन भारतीय स्वतन्त्रता की महादेवी को आवाहित करने के लिए सशस्त्र संघर्ष एवं विद्रोह का मार्ग अपनाता है।' भारतीय पुनर्जागरण का आन्दोलन पहले धर्मसुधार व समाज सुधार के क्षेत्र में प्रकट होता है और बाद में उसका राजनीतिक संस्करण सामने आता है नवजागरण की यह प्रक्रिया भारत में अंग्रेजों के सम्पर्क से उत्पन्न क्रिया-प्रतिक्रिया के बीच प्रकट होती है। इसमें दो तरह की चेतना का स्वरूप प्रकट होता है।

एक ओर तो भारतीय समाज में एक ऐसा सुधारवादी उदारपन्थी नेतृत्व खडा होता है, जो ब्रिटिश साम्राज्य के माध्यम से आने वाले सुधारवादी कार्यक्रमों का कायल था और उस सम्पर्क के कारण पश्चिम से आने वाले आधुनिक मूल्यों की रोशनी में भारत को उन जीर्ण शीर्ण प्रथाओं, परम्पराओं एवं अन्य प्रतिगामी मध्ययुगीन प्रवृतियों से निकालना चाहता था, जिसके कारण देश पतन, पराभव एवं पराधीनता का शिकार बना दूसरी ओर भारत में पुर्नजागरण की नव चेतना के फलस्वरूप एक ऐसा वर्ग भी सामने आता है जो ब्रिटिश समाज से आने वाले मूल्यों को भारत की अपनी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पहचान के लिए गम्भीर खतरा मानते हुए उनके विरूद्ध निषेधात्मक रवैया अपनाता है। ऐसे नेतृत्व वर्ग का आग्रह था, कि अपने अतीत की तरफ मुड़कर देखो। भारतीय अतीत में बहुत कुछ ऐसा है जो विवेक की कसौटी पर अनुकरणीय सिद्ध होता है। वहाँ

बहुत कुछ ऐसा है जो गौरव योग्य है। अतः पश्चिमी परम्पराओं के पीछे भागने की अपेक्षा अपने भारतीय अतीत को पुनः स्थापित करो। यह स्कूल पश्चिम से प्रेरित होकर चलने वाले सुधारवादी आन्दोलन के विरूद्ध तथा पुनरुत्थानवादी चेतना से अनुप्राणित था।

पुर्नजागरण की चेतना से जुड़ी उपर्युक्त दोनों चिन्तन धारायें, भारतीय पुनर्जागरण के आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सुधारवादी और पुनरूत्थानवादी आन्दोलन के रूप में इन दोनों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। नवजागरण के राजनीतिक परिणामों के दौर में भी इन दोनों का प्रभाव सुस्पष्ट था। कांग्रेस के भीतर इसकी अभिव्यक्ति नरमदल और गरम दल के वैचारिक अन्तर्द्वन्द के साथ होती है। जहाँ एक और उदारवादी, राष्ट्रवाद की चेतना इसके परिणाम स्वरूप उभरती है वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पुट लिए हुए उग्रराष्ट्रवाद की चेतना का प्रगटीकरण होता है। उदारवादी राष्ट्रवाद में जहाँ आगे चलकर आर्थिक राष्ट्रवाद के लक्षण उभरते हैं, वहीं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा में धार्मिक प्रभाव कुछ अधिक गाढा नजर आता है। इन दोनों की कार्यशैली में भी अन्तर था। एक ओर जहाँ उदारवादियों की संविधानवादी कार्यशैली में अंग्रेजों के प्रति नरम तथा प्रशंसात्मक रुख शामिल था, वहीं दूसरी ओर गरम दल के लोगों में भारत में अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध आन्दोलनात्मक सीधी कार्यवाही के आग्रह का रूख था। आगे चलकर महात्मा गांधी के साथ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की इन दोनों धाराओं में एक समन्वय प्रकट होता है। गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जो स्वरूप प्रदान किया, उसमें नरमदल की संविधानवादी एवं नैतिक राजनीति तथा गरम दल वालों की उत्कट देशभक्ति में उद्धभूत सीधी कार्यवाही के आग्रह का एक समन्वय प्रस्तुत होता है। गाँधी ने चम्पारन से अहिंसक सत्याग्रह के अत्यन्त प्रभावशाली राजनैतिक हथियार का अभिनव प्रयोग शुरू किया और 1920 के असहयोग आन्दोलन तक आते-आते उसे राष्ट्रीय आन्दोलन

की सबसे मान्य रणनीति बना दी। सत्याग्रह में संविधानवादी कार्यपद्धति के निहितार्थी तथा नैतिक राजनीति के आग्रहों का स्वतः समावेश था। गांधी ने इसी के साथ दूसरी ओर गरम दल वालों की सीधी कार्यवाही की रणनीति से जुड़े बहिष्कार एवं स्वदेशी जैसे कार्यक्रमों को सत्याग्रहों के साथ समायोजित करते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन को न केवल जनान्दोलन बनाया बल्कि उसका अत्यन्त प्रभावशाली अहिंसक स्वरूप प्रस्तुत किया, जिसकी काट अंग्रेजों के लिए बहुत कठिन थी। उग्रराष्ट्रवाद की गरमदलीय राजनीति और उदारवादियों की नरमदलीय राजनीति गांधी में एक संगम की भाँति समाहित होकर अपनी अन्तर्द्वन्द भरी, पृथक पहचान खो बैठी, लेकिन भारतीय स्वतन्त्रता के महालक्ष्य से प्रेरित एक ऐसा वर्ग गांधी के पूर्व और गांधी के बाद भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना सक्रिय अस्तित्व बनाये हुए था, जो संघर्ष की संविधानवादी अथवा अहिंसावादी रणनीति में विश्वास नहीं करता था। भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था को लेकर इस आन्दोलित वर्ग में भी मतवैभिन्य थे और राजनीति एवं धर्म के रिश्तों को लेकर भी उनके बीच विभाजक रेखायें थीं, लेकिन उनमें एक पक्ष जो साझा था, वह इस विश्वास पर टिका था कि भारतमाता के पांव में पड़ी परतन्त्रता की बेडियों को काटने के लिए हथियार उठाने और सशस्त्र विद्रोह का मार्ग अपनाने में कुछ भी अनुचित नहीं है।

शायद उनका विश्वास था कि उनके लक्ष्य की ओर जाने का यही सबसे उचित और विश्वसनीय रास्ता है भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में इन्हें "क्रान्तिकारी" कहा गया। अतः क्रान्ति शब्द का वैचारिक निहितार्थ भले ही भिन्न हो, लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ में "क्रान्ति" और "क्रान्तिकारी" अथवा. "क्रान्तिकारी आन्दोलन" शब्दों का प्रयोग स्वतन्त्रता संघर्ष के उस पक्ष से जुड़ा हुआ है, जो हिंसा की संगठित शक्ति के सहारे भारत में ब्रिटिश सत्ता को उलटने एवं भारत की राजनीतिक

स्वतन्त्रता की सिद्धि में विश्वास करता था। भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन की गतिविधियाँ राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्पूर्ण इतिहास में फैली हुई हैं, लेकिन उनमें संगठित तारतम्य नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर देश भर में छिटपुट फैले क्रान्तिकारी आन्दोलनों को संगठित कर उसे राष्ट्रीय स्वरूप व प्रभाव देने की कोशिशें भी हुई, लेकिन वह अधिक टिकाऊ नहीं साबित हुई। अहिंसक सत्याग्रह का गांधीवादी आन्दोलन जिस प्रकार संगठित राष्ट्रीय जन आन्दोलन का रूप लेता चला गया, उससे उस दौर में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के क्रान्तिकारी आन्दोलनों को एक संगठनात्मक स्वरूप में बांध कर उसे राष्ट्रीय स्वरूप देने की कोशिशें बहुत कामयाब नहीं हुई। गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह की लोकप्रियता ने भी क्रान्तिकारी आन्दोलन को बहुत लोकप्रिय आधार नहीं प्राप्त करने दिया। इन सब बातों के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रान्तिकारी आन्दोलन वाले पक्ष को महत्वहीन मानते हुए उसकी कदापि उपेक्षा नहीं की जा सकती। क्रान्तिकारी आन्दोलन की गतिविधियों ने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को अपने ढंग से तेजस्विता प्रदान की। उससे जुड़े अनेक महान् स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने असाधारण त्याग व बलिदान की अमिट गाथाओं के माध्यम से स्वतन्त्रता की चेतना को उत्तेजित किया। स्वतन्त्रता के क्रान्तिकारी आन्दोलन के तीन मुख्य केन्द्र-बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब थे। इनके बीच एक समन्वय स्थापित करते हुए क्रान्तिकारी आन्दोलन के स्वरूप को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित करने के विभिन्न प्रयासों में बनारस ने एक सेतु सरीखे केन्द्र का काम किया। विशेषतः पंजाब और बंगाल के बीच क्रान्तिकारी चेतना को जोड़ने का यह सबसे सशक्त केन्द्र साबित हुआ। क्रान्तिकारी संगठन को राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा किये जाने के प्रयासों के पीछे भी तार बनारस से जुड़े हुए थे। इस तरह बनारस जहाँ गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र था, वहीं यह क्रान्तिकारी आन्दोलन का भी 1905 की बनारस कांग्रेस में गोपालकृष्ण गोखले की अध्यक्षता में "स्वदेशी" व "स्वशासन" के नये

लक्ष्यों की स्थापना 1916 में "काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना', 30 मई 1920 को बनारस में पहली बार कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के तहत "खादी के संस्थागत आन्दोलन" एवं "काशी विद्यापीठ" के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा के आन्दोलन" की अग्रणी शुरूआत होना और 1927 में बनारस में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में "साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया जाना आदि ऐसे उदाहरण हैं जो बनारस को गांधी जी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं।' इन सब के बावजूद रास बिहारी बोस, शचीन्द्र नाथ सान्याल, चन्द्रशेखर आजाद भूपेन्द्र नाथ सान्याल, रवीन्द्रनाथ बख्शी, सुशील लाहिड़ी मन्मथनाथ गुप्त प्रणवेश चटर्जी, राजेन्द्र लाहिड़ी आदि क्रान्तिकारियों से भी जुड़ा रहा' बनारस' जो विशेषतः 8 20 वीं सदीं के क्रान्तिकारी आन्दोलन का महत्वपूर्ण गढ़ था।

भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन की असगठित एवं विभिन्न क्षेत्रों में गठित छिटपुट घटनाओं का सिलसिला बहुत पुराना है। 1857 के विद्रोह को भी क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है, लेकिन उसके बाद भी राष्ट्रीय आन्दोलन का सिलसिला जो आगे बढ़ा, उसमें क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़े अनेक घटनाक्रम का राष्ट्रीय महत्व है। इन घटनाओं की क्रमिक प्रस्तुति के साथ तथा भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन के उदय एवं सम्पूर्ण विकास के साथ भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है। क्रान्तिकारी आन्दोलन में बनारस की भूमिका आन्दोलन के उस समगत सन्दर्भ का हिस्सा रही है।

18 वीं शताब्दी के क्षेत्रीय, जातीय व सैनिक विद्रोहः

भारत में आये अंग्रेजो ने व्यापारिक चोले को फाड़कर और प्लासी के युद्ध में विजय प्राप्त कर औपनिवेशिक दानव को प्रकट किया तथा बल प्रयोग

से लैस होकर भारतीय राजनीति में कदम रखा। व्यापारिक उद्देश्यों के निमित्त निर्मित कम्पनी के द्वारा सत्ता का रसास्वादन कर लेने के बाद उसकी क्षुधा बढ़ती गयी। यह धारा एक वर्ष तक चलती रही। राजनीतिक पराभव के बावजूद भारत की जनता में आत्मगौरव अभी जीवित था।" स्वतन्त्रता की प्यास व बलिदान देने का साहस किसी में कम नहीं था। यही कारण है कि समय-समय पर साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ विद्रोह का झण्डा बुलन्द होता रहा एवं क्रान्ति की चिन्गारी फूटनी शुरू हो गई। महाराजा नन्द कुमार पहले विद्रोही थे, जिन्होंने अँग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की गुप्त योजना बनाई। परिणामतः जालसाजी का फर्जी मुकदमा चलाकर नन्द कुमार को फांसी की सजा दी गयी। 12 इसके बाद 1767 ई. में जंगल महाल के जमीदारों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बंगावत का झण्डा बुलन्द कर ब्रिटिश सेना के दॉत खट्टे कर दिये। प्लासी के कुछ सालों के बाद 1764 में बंगाल की सेना में बड़ा व्यापक विद्रोह हुआ, इन विद्रोहियों को तोप से उड़ा दिया गया। 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सशस्त्र सन्यासियों और फकीरों के विद्रोह ने बंगाल में कम्पनी शासन के नाकों दम कर दिया। सन् 1762 से 1774 तक भवानी पाठक, मजनूशाह, देवी चौधरानी के नेतृत्व में सन्यासियों और मुस्लिम फकीरों के गिरोह ने अनेक युद्ध स्थलों में अंग्रेजों का सामना किया। मई 1774 ई0 में अंग्रेजों की हिन्दुस्तानी सेना ने पटना में विद्रोह किया। 1798 ई० में चुआड़ों ने भी अंग्रेजों को खुली चुनौती दी। तिलक झाकी के नेतृत्व में प्रथम संथाल विद्रोह 13 हुआ। तिलक को 1784 में फांसी चढ़ाया गया।

"सार्वजनिक विद्रोह" (संघबद्ध विद्रोह):

इसी प्रकार अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध केवल सैनिक, क्षेत्रीय, जातीय विद्रोह ही नहीं हुए, बल्कि कई तरह के सार्वजनिक विद्रोह की चेष्टा भी हुई। इनमें प्रमुख विद्रोह निम्नलिखित थे-

(1) वहावी विद्रोह (प्रथम संघबद्ध विद्रोह):

इन विद्रोहों में बहावियों का विद्रोह (1831) विशेष उल्लेखनीय है जो भारत से विदेशी शासन को समाप्त करने का सर्वप्रथम संघवद्ध प्रयास था। अत्याचारी सरकार के निरंकुश शासन को समाप्त करना ही इसका उद्देश्य था।

(2) 1857 का विद्रोह :

उन्नीसवीं सदी के पूर्वाद्ध तक प्रतिरोध के दो स्वरूप प्रकट हो गये थे। पहला स्वरूप सामंती व परम्परावादी था, जिसके अन्तर्गत हिन्दू व मुस्लिम शासकों ने अंग्रेजों को विदेशी शोषक मानकर उन्हें हिंसात्मक तरीकों द्वारा भगाने का प्रयास किया, दूसरा तरीका नया व विकसित था, जो अंग्रेजी शिक्षा व पश्चिमी विचारों से प्रभावित था, इसका उद्देश्य ब्रिटिश संरक्षण में धीमी गति से संवैधानिक स्वशासी सरकार की स्थापना करना था। प्रतिरोध का प्रथम स्वरूप 1857 में अपनी ऊँचाई पर पहुँच गया। भारतीय कान्तिकारियों ने ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए '1857 की कान्ति का श्रीगणेश किया। वास्तव में यह क्रान्ति ही भारत का पहला मुक्ति-संग्राम' थी। ब्रिटिश शासन के विगत सौ वर्षों के अन्याय, अत्याचार, अपमान, जातीय विद्वेष से जले-भुने भारतीय पराधीनता के पाश से मुक्ति के लिए हिन्दू-मुसलमान पारस्परिक भेदभाव भूलकर 1857 की क्रान्ति में कूद पड़े। सम्पूर्ण उत्तर भारत में क्रान्ति की लपटें फैल गयीं, किन्तु क्रान्ति हो जाने के बाद की योजना के अभाव में क्रान्ति के परिणाम स्थायी नहीं हो पाये। सरकार ने क्रान्ति का क्रूरतापूर्वक दमन किया। यद्यपि 1857 की क्रान्ति असफल रही, किन्तु महासमर में सर्वस्व न्योछावर करने

वाले शहीद परवर्ती, कान्तिकारियों के प्रेरणा स्त्रोत बने साम्राज्यवादी सरकार बहुत प्रयास के बाद भी क्रान्ति की मूल भावना का दफन नहीं कर सकी। उसके बाद उतने बड़े पैमाने पर सशस्त्र बगावत की दूसरी कोशिशें भले ही सम्भव न हुई हो, पर इस धारा को अपने लहू से सींचने वालों की कमी भी नहीं हुई।

क्रान्ति का तात्कालिक एक परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश जनता का ध्यान भारत की तरफ खिंचा और कम्पनी के शासन का अन्त करने का निश्चय किया। 1858 में एक घोषणा पत्र जारी किया गया जिसमें भारतीयों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न करने का निश्चय किया गया। दूसरा परिणाम अंग्रेजों तथा भारतीयों में आपसी घृणा बहुत अधिक उत्पन्न हो गई। तीसरा परिणाम भारत में अपनी पुरानी कट्टरता को छोड़कर अंग्रेजी न्याय पद्धति और कानून को समझा। 1857 की क्रान्ति से भयभीत अंग्रजों ने एक और प्रशासनिक परिवर्तन कर सुदृढ़ शासन की स्थापना की, तो दूसरी ओर पोप पादरियों ने राजनीतिक संरक्षण में ईसाइमत का प्रचार और तेज कर दिया खुले आम भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म पर आक्रमण किया जाने लगा। उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे देश में राष्ट्रीय भावनायें जितनी तेजी से फैली, उसका श्रेय राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामी विवेकानन्द तथा इण्डियन नेशनल कांग्रेस को प्राप्त है।

पुनर्जागरण के अग्रदूत राजाराम मोहनराय :

राजाराम मोहनराय इस पुनर्जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं जो अंग्रेजो को अपने देश में दैवीय वरदान मानते थे और जो भारत के लोगों में अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से अपने लिए क्लर्क पैदा करने की कोशिश कर रहे थे। राजा राममोहन राय ने इसी प्रकाश की किरणों में अपने देश में पुनर्जागरण लाने की कोशिश की। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का एक कारण धार्मिक

आन्दोलन भी था। पुनरूत्थानवाद के साथ ही में धार्मिक आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन के कारण नहीं थे, बल्कि ईसाइयों के धर्म विरोधी प्रचार के कारण थे। राजाराम मोहनराय तथा उनके द्वारा स्थापित ब्रह्मसमाज ने पुनर्जागरण का विगुल जरूर बजाया परन्तु पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और ईसाइयत की धुन पर तथापि वे भारतीय अस्मिता व स्वाभिमान का स्वर मुखरित नहीं कर पाये।

स्वामी दयानन्द सरस्वती :

राजाराम मोहनराय के पश्चात् भारतीय रंगमंच पर जिन्होंने समाज सुधार धर्म-सुधार और राष्ट्रवाद की भावनाओं को सारे देश में जाग्रत करने के लिए महानतम् कार्य किया, वे थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। वे वैदिक पुनरूत्थानवाद के आक्रमक योद्धा थे। उनकी मान्यता थी कि पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति पर समय रहते यदि प्रहार नहीं किया गया तो राष्ट्रीय भावना, जिसका वे पोषण करना चाहते हैं, संकट में पड़ जाएगी। स्वामी दयानन्द इस बात को स्वीकारते थे कि भारतीय पुनरूत्थानवाद और आधुनिकीकरण भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर ही सम्भव है। दयानन्द ने भारतीय दर्शन, धर्म, आध्यात्म, आचार, शस्त्र का अध्ययन करते समय भारतीय संस्कृति की मूल धारा की गतिशीलता और मौलिकता के प्रति लोगों को आकर्षित किया तथा भारतीय समाज को आन्दोलित व गतिशील बनाने का प्रयत्न किया। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तो सुधार कहलाता है, किन्तु वही जब तीव्र वेग में पहुँच जाता है, तब उसे "क्रान्ति" कहते हैं। दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये तथा निश्चय भाव से यह घोषणा कर दी, कि हिन्दू ग्रन्थों में केवल वेद ही मान्य है।

स्वशासन के आकांक्षी दयानन्द ने इस उदघोष के साथ "सुराज स्वराज्य से अच्छा कदापि नहीं हो सकता है स्वशासन, स्वराज्य की घोषणा की।" वे

भारत की राजनीतिक दासता से बहुत दुखी थे स्वराज्य आन्दोलन को निर्बल समाज एवं विदेशी जीवन पद्धति का उपजीवी होकर सफल नहीं बनाया जा सकता। इस बात का श्रेय दयानन्द सरस्वती को ही है, उन्होंने देश में ऐसी चेतना जागृत की, जिससे भारतीय समाज व्यवस्था स्वराज्य सम्बन्धी विचारधारा को आत्मसात करने एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने में सफल हुआ। वास्तव में 1875 में आर्य समाज की स्थापना करें स्वामी दयानन्द ने भारत में सामाजिक धार्मिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय एकता और विदेशी शासन से मुक्ति के लिए जोरदार अभियान चलाया। यद्यपि आर्य समाज राजनीतिक संस्था नहीं थी, फिर भी उसने देश भक्ति की भावना फैलायी और समस्त उत्तर भारत में स्वाभिमान, सामर्थ्य और स्वतन्त्रता का सन्देश घर-घर पहुँचाया। यही कारण है कि उनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, प० लेखराम, भाई परमानन्द प्रभृति शिष्यों ने उनके बाद भी आर्य समाज और राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रखर नेतृत्व प्रदान किया।

स्वामी विवेकानन्द :

इसके उपरान्त इस आन्दोलन को आगे बढाया स्वामी विवेकानन्द ने जिन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने का वीणा उठाया। स्वामी विवेकानन्द के आन्दोलन का आधार वेदान्त था। वे भारतीय संस्कृति को, पाश्चात्य संस्कृति की उपेक्षा श्रेष्ठ मानते थे, क्योंकि पाश्चात्य सर ति भौतिक है, जबकि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक वे उदार विचारों के व्यक्ति थे, उन्होंने अनुभव कर लिया था कि सब धर्म, एक ही सनातन धर्म के अंश और अंग हैं, इसलिए उन्होंने किसी धर्म पर आपेक्ष नहीं किया। स्वामी विवेकानन्द इस बात पर भी जोर देते थे कि सिर्फ सोच-विचार और कामकाज की आजादी ही जिन्दगी तरक्की और खुशहाली की शर्तें हैं, जहाँ ये आजादी नहीं है वहाँ उस आदमी, जाति तथा

राष्ट्र को जिन्दा नहीं रखा जा सकता। वह पश्चिम प्रगति और भारत की आध्यात्मिकता को मिला देना चाहते थे। यूरोपीय समाज हो भारत का धर्म हो। इस प्रकार संकमण काल में स्वामी दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर तथा स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त (अद्वैतवाद) के आधार पर राष्ट्रवाद का प्रचार किया तथा राष्ट्रीयता आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

19वीं सदी क्रान्ति की छिटपुट क्षेत्रीय घटनायें : अब भारत का राजनीतिक वातावरण शनैः शनैः गर्म होने लगा। इसी दौरान क्रान्ति की छिटपुट घटनायें होने लगी, पहली घटना बहावियों द्वारा सितम्बर 1871 में कलकत्ता के चीफ जस्टिस नार्मन की हत्या, दूसरी फरवरी 1872 में अंडमान के गवर्नर लार्ड मेयो 20 की हत्या। तीसरा पंजाब में नामधारी सिक्खों या कूकों का स्वतन्त्रता आन्दोलन 1849 में पंजाब के अंग्रेजी राज्य में शामिल होने के बाद वहाँ की बिगड़ती दशा को देखकर नामधारी सिक्खों के गुरू रामसिंह जी ने 13 अप्रैल 1857 को देश और धर्म की रक्षा करने का उपदेश देना शुरू किया। पंजाब विजय के पश्चात् अमृतसर, राजकोट में अंग्रेजों ने बूचड़खाने खोल दिये, तथा गोवध करने लगे। नामधारी सिक्खों ने उनपर आक्रमण किये तथा अंग्रेजों द्वारा मृत्युदण्ड दिये गये। इसी प्रकार 15 फरवरी 1872 को मलेर कोटला के बूचड़खाने पर आकमण कर दिया, जिसमें सिक्खों की जीत हुई लेकिन शेरपुर विश्राम गृह पुलिस द्वारा घेर लिया गया। वहाँ वह लुधियाना के डिप्टी कमीश्नर के आदेशों की उपेक्षा करके नाभा, पटियाला और जींद रियासतों की पलटनें और तोपें भगवा ली 49 नामधारियों को बिना मुकदमा चलाये तोपों से उड़ा दिया गया। 18 जनवरी को कावन की आज्ञा से 61 नामधारी और तोप से उड़ा दिये गये। इससे पूर्व 17 जनवरी 1872 को गुरु रामसिंह को 11 सिक्खों के साथ देश निकाला दे दिया गया और रंगून भेज दिया गया। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

सशस्त्र क्रान्ति की घटनायें (दक्खिन विद्रोह) : अंग्रेजों के आर्थिक शोषण से न्यायमूर्ती रानाडे अत्यन्त दुखी हुए तथा इस विषय में 1872-1873 में एक आलोचनात्मक भाषण दिया, उसका वासुदेव बलवन्त फड़कें पर बहुत प्रभाव पड़ा। 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के उपरान्त 1879 में शक्ति सम्पन्न ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक व्यक्ति द्वारा संचालित यह विद्रोह एक भयंकर विस्फोट था। 1876 में पूना में बड़ा भारी अकाल पड़ा, पर सरकार ने कोई खास कदम नहीं उठाया, इसलिए वासुदेव बलवन्त फडके के मन में विद्रोह की आग भड़क उठी और नौकरी छोड़कर क्रान्ति संगठित करने लगें, उन्होंने अपने प्रत्येक भाषण में कहा- "मैं अँग्रेजों को भगाकर जनता का राज स्थापित करूंगा। वासुदेव बलवन्त फडके ने सशस्त्र क्रान्ति द्वारा भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई। उन्होंने अपने भाषणों में शासन की तीव्र भर्त्सना की और कहा कि शासन की अक्षमता, अत्याचार और क्रूरता का प्रतिरोध करना जनता का नैतिक कर्तव्य है।

राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना : फड़के के विद्रोह का तत्कालीन परिणाम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में रूपायित हुआ। लार्ड डफरिन ने भारत की तत्कालीन परिस्थितियों को 'समुद्री तुफान' की संज्ञा दी थी। जिसमें ब्रिटिश शासन का अस्तित्व एकाकी चट्टान की भांति था। इस एकाकीपन को समाप्त करने के लिए पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतियों से सम्पर्क और सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता थी ताकि अति राष्ट्रवादियों को राजनैतिक मुख्यधारा से अलग किया जा सके। अतः कांग्रेस का जन्म, भारत के गवर्नर जनरल लार्ड डफरिन और सेवा निवृत्त सिविल सर्विस अधिकारी ए०ओ० हयूम के सक्रिय प्रयासों का परिणाम था। दोनों ही शुभेच्छाओं के मस्तिष्क में 'दक्खिन के विद्रोह और हिंसा' अपने आप में ही एक चेतावनी थी। अंग्रजों ने यह संस्था इस लिए बनाई थी कि इसके द्वारा भारतीयों का असन्तोष दूर करके ब्रिटिश साम्राज्य को चिरस्थायी बनाया

जाय, इसलिए वे भारतीयों की साधारण सी शिकायतों को दूर करना चाहते थे। दूसरी तरफ कांग्रेस के नेतृत्व का विश्वास था कि इस स्वामी भक्ति के इजहार से इग्लैण्ड के ब्रिटिश शासक तत्कालीन भारत सरकार को भारतीयों को अंग्रेजों के समान नागरिक अधिकार देने को बाध्य करेंगे। अपनी मांगों को पेश करने के लिए उन्होंने अनुनय-विनय की नीति अपनायी, इसके बदले में साम्राज्यवादियों ने केवल तिरस्कार दिया। इसके परिणाम स्वरूप कांग्रेस का एक वर्ग इस अनुनय विनय की नीति का विरोध करने पर उद्यत हो गया। इसका प्रारम्भ अरविन्द घोष ने 1893 में 'इन्दू प्रकाश में लिखे अपने लेखों से किया। उनका अनुसरण तिलक ने 1895 में कांग्रेस के नेतृत्व पर यह आरोप लगाकर किया कि वह कांग्रेस को आम जनता तक नहीं ले जाना चाहते।

महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता की लहर तथा धार्मिक आन्दोलन : फड़के की गिरफ्तारी के बाद उनके शिष्य बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता की नई लहर उत्पन्न की तथा प्रारम्भिक कान्तिकारी आन्दोलन के जनक बनें। मराठा और केसरी के माध्यम से राजनीतिक चेतना और स्वराज्य का प्रचार किया, साथ ही गणपति उत्सव व शिवाजी उत्सव को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाने की परम्परा आरम्भ की, जिसका उद्देश्य भारतीयों को राजनैतिक और स्वराज्य प्राप्ति के लिए सतत् संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करना था, शीघ्र ही यह आन्दोलन लोकप्रिय हो गया। उन्होंने शिक्षित युवकों को निद्रात्याग कर उठने के लिए कहा। प्राचीन गौरवशाली परम्परा सभ्यता, संस्कृति की याद दिलाई, इसके लिए शिवाजी उत्सव, व गणपति उत्सव मनाये गये नवयुवकों में स्वाभिमान, आत्मविश्वास और त्याग की भावना उत्पन्न की गई।

शिवाजी उत्सव का आयोजन सर्वप्रथम रायगढ़ में 15 मार्च 1895 को हुआ। इन उत्सवों पर गाये जाने वाले गीतों और श्लोंको में राजनीतिक उद्देश्य से हिंसा का मार्ग अपनाने का स्पष्ट आह्वान था।

12 जून 1897 को मनाये गये शिवाजी अभिषेकोत्सव का विवरण देते हुए तिलक ने अपने मराठी साप्ताहिक 'केसरी' में 'शिवाजी की उक्तियाँ शीर्षक, कुछ पद्य प्रकाशित किये। इस पर लोकमान्य तिलक को 18 माह कैद की सजा हुई, सरकार का आरोप था कि उन उक्तियों के बहाने तिलक ने अंग्रेज जाति के विरूद्ध प्रचार किया।

अभिनव भारत के द्वारा किये गये क्रान्तिकारी कार्य : अभिनव भारत के बापटादिक के जो सदस्य रशियन क्रान्तिकारियों के सहयोग से हस्तध्वम से कालध्वम तक सभी प्रकार के बमों को बनाने की विद्या पेरिस में गुप्त रूप से सीख रहे थे उनमें से हेमचन्द्र दास नामक बंगाली क्रान्तिकारी द्वारा बंगाल लौट कर बनाये हुए बम को "युगान्तर" नामक गुप्त संस्था के स्व० खुदीराम बोस ने किंग्सफोर्ड, समझ कर कैनेडी पर फेंका था। सफलता से उड़ा हुआ यह प्रथम बम अभिनव भारत के ही दीर्घ प्रयत्नों का फल था। इस बम के विस्फोट के साथ-साथ हिन्दुस्तान में प्रचलित पुरानी राजनीति का स्फोट हो गया और उसमें सशस्त्र कान्ति के रक्तरंजित युग का उदय हुआ। उसके पीछे लन्दन के बीचों बीच वीर सावरकर की प्रेरणा से एक सभा में सर कर्जन वाइली को 1 जुलाई 1903 को मदन लाल धींगरा द्वारा गोली से उड़ा दिया गया।

अभिनव भारत द्वारा पेरिस में स्वतन्त्र भारत का झण्डा फहराना : यूरोप में प्रतिवर्ष होने वाले प्रजातान्त्रिक गुटों का सम्मेलन 1907 के 18 अगस्त को, 97 जर्मनी के स्टुटगार्ड नगर में हुआ जिसमें अभिनव भारत की मैडम कामा तथा सरदार सिंह राणा ने प्रतिनिधित्व किया, इस अवसर पर अंग्रेजों

के राज्य को उलट कर हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने वाले सशस्त्र क्रान्तिकारियों की ओर से मैडम कामा ने अपना उद्दीपन भाषण देते हुए बीच में हेमचन्द्र दास द्वारा चित्रित ध्वज को निकालकर आवेश में आगे-पीछे फड़फड़ाते हुए अपने उदगार निकाले।

1908 की 20 दिसम्बर को लन्दल के कैक्सटन हाल में भारतीय देशभक्तों का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें लाला लाजपत राय, विपिनचन्द पाल, आगा खाँ खापर्दे आदि उपस्थित थे, मैडम कामा ने भारत में विदेशी वस्तु वायकाट का प्रस्ताव रखा तथा वीर सावरकार ने "स्वराज" की मांग पेश की।

बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन : बंगाल में सर्वप्रथम 1876 में 'हमचुपामूहाफ' नामक गुप्त संगठन अस्तित्व में आया, जो संजीवनी सभा का गुप्त नाम था, इसके अध्यक्ष राजनारायण बसु और मंत्री ज्योतिन्द्रनाथ ठाकुर थे इसकी समस्त कार्यवाही गुप्त भाषा में लिखी जाती थी। इसी समय 'अग्निमन्त्र की दीक्षा' नामक संगठन भी स्थापित हुआ। 1894 ई0 तक में संगठन अपने क्रान्तिकारी विचारों के माध्यम से पूरे बंगाल में छा गये। 1900 ई0 में 'आत्मोन्नति समिति की स्थापना से इस कार्य में और तेजी आई।

इसके बाद 1901 में कलकत्ता में एक गुप्त समिति की स्थापना हुई, 1902 की बसत पूर्णिमा को इसका नाम 'अनुशीलन समिति रखा गया, जिसके अध्यक्ष प्रथम नाथ मित्र और मंत्री सतीश बसु बनाये गये।

चापेकर और सावरकर बन्धुओं की तरह बंगाली क्रान्तिकारीयों ने भी धर्म के सहारे लोगों को उभाड़ा था, वे स्वयं धर्म के कट्टर मानने वाले थे इसी समय व्यायाम तथा मानसिक उन्नति के लिए अनुशीलन और सहृदय समितियां खुली। इनका प्रचार गाँव-गाँव तक फैला अकेले ढाका समिति

की 600 शाखायें थी। अनुशीलन समिति का प्रारम्भ उपर्युक्त समितियों के संघ के रूप में हुआ, किन्तु शारीरिक प्रशिक्षण के साथ ही इसका एक बौद्धिक पक्ष भी था, जिसमें विविध विषयों पर चर्चा होती थी। पी० मित्र पूरे बंगाल में एक ही नाम का सशक्त संगठन खड़ा करना चाहते थे, जिसकी स्थापना उन्होंने 1906 में ढाका की अनुशीलन समिति की नाम से की बहुत दिनों तक ये समितियाँ खुल्लम-खुल्ला काम करती रहीं, किन्तु सरकार ने जब उन पर प्रहार किया, तो ये खुली समितियां कुछ सदस्यों को लेकर गुप्त समितियों में परिणित हो गयी।

क्रान्तिकारी समितियाँ बंगाल, अन्य प्रान्तों तथा विदेशों में : बंगाल के बाद अन्य प्रान्तों व विदेशों में भी कई क्रान्तिकारी समितियाँ बनी ये क्रान्तिकारी मध्यम वर्ग के पढ़े-लिखे युवक थे, इनका विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार से रियायतें प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीके कारगर नहीं हो सकते और बल प्रयोग का तरीका ही जो रूस तथा अन्य यूरोपीय देशों में अपनाया गया है एक मात्र कारगर तरीका है।

इसी बीच दल के नेतृत्व और कार्यक्रम को लेकर पी० मित्र और उनके सहयोगियों में मतभेद हो गया। समिति के उत्साही युवकों ने महसूस किया कि पी० मित्र और सतीश बसु के नेतृत्व में गुप्त क्रान्तिकारी कार्य नहीं किये जा सकते, फलस्वरूप यह समिति अनुशीलन समिति से अलग हो गयी। इसने मानिकतुल्ला बाग में गुप्त अड्डा बनाया और बम बनाना प्रारम्भ किया। मानिकतुल्ला बाग का यह सक्रिय दल ही बाद में युगान्तर दल के नाम से विख्यात हुआ, जिसके नेता व स्रोत अरविन्द घोष थे। इस दल का एक पक्ष पूर्णतः गुप्त, शस्त्र संग्रह में सलग्न व बम बनाने में व्यस्त था तथा दूसरा पक्ष साप्ताहिक समाचार पत्र युगान्तर का सम्पादन करता था, जो सर्वप्रथम मार्च 1906 में प्रकाशित हुआ, यह तत्कालीन गुप्त कान्तिकारी विचारों का प्रवक्ता और गुप्त हिंसक कार्यवाइयों का प्रबल समर्थक था।

युगान्तर दल' ने एक आन्दोलन के रूप में विकास किया, जिसे उस समय के संगठनों और युवकों का भरपूर सहयोग मिला। 1906 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के समय, क्रान्तिकारियों का एक सम्मेलन सुबोध मलिक के घर सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पी० मित्र ने की थी, जिसमें पुलिस की क्रूरता के विरोध में प्रत्यक्ष कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया तथा सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों के सम्पर्क में युगान्तर को 110 विभिन्न जिलों में संगठनात्मक श्रंखला बनाने में काफी सहयोग मिला।

1900-1920 के बीच स्वाधीनता आन्दोलन : बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में स्वाधीनता आन्दोलन और अधिक तेज हुआ, एक तरफ कांग्रेस जनता के लिए और अधिकारों की मांग करती रही, दूसरी तरफ लार्ड कर्जन ने कई जन विरोधी कानून बनाकर जनता के अधिकार और सीमित कर दिये, विवादास्पद विश्व विद्यालय विधेयक पारित किया, उक्त विधेयक से आक्रोश अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि कर्जन ने जनमत की अवहेलना करते हुए 16 अक्टूबर को बग विभाजन की घोषणा कर दी।

कर्जन की हरकतों व वक्तव्यों के कारण भारत की जनता के आत्म सम्मान को ठेस पहुँची। बंगालियों में इस अपमान की जो ज्वाला भड़की, वह देखते-देखते महाराष्ट्र. मद्रास, पंजाब और अन्य प्रदेशों में भी फैल गयी। विभाजन विरोधी आन्दोलन शीघ्र ही स्वातन्त्य आन्दोलन में परिवर्तित हो गया। इसके विरूद्ध कांग्रेस ने जिस स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन का सूत्रपात किया, वे सशक्त जन आन्दोलन थे तथा इसके अन्तर्गत कान्तिकारी प्रमुख शक्ति के रूप में सक्रिय थे। जगह-जगह पर 'वन्दे मातरम्', 'भारत माता की जय के नारे लगाये गये। वन्दे मातरम् समितियाँ, 'स्वदेशी मण्डली' 'सुहृदय समिति, स्वदेश बान्धव समिति, प्रमृति संगठनों ने इस आन्दोलन को पर्याप्त शक्ति प्रदान की। इसी बीच

फरवरी 1904 में रूस-जापान युद्ध में जापान की जीत से क्रान्तिकारियों में उत्साह, उमंग और खुशी की लहर दौड़ गयी।

पैट्री के अनुसार "कान्तिकारी विचार 1857 में दबे हुए थे, वे रूस जापान युद्ध से पुनर्जागृत हो गये और भारतीय बमों रिवाल्वरों और संगठित षडयन्त्र द्वारा ब्रिटिश शासन को उरवाड़ फेंकने का प्रयास करने लगे।

1905-1910 की छिटपुट क्रान्तिकारी घटनायें : 1907-08 के कालखण्ड में क्रान्तिकारियों ने अत्याचार करने वाले सरकारी कर्मचारियों को दण्ड देने का अभियान शुरू किया। इसी क्रम में 1907 ई0 में युगान्तर समिति ने बंगाल के छोटे लाट सर एंड्रूफेजर की हत्या की योजना बनाई। 25 दिसम्बर 1907 ई० को ढाका के पूर्ण मजिस्ट्रेट बी०सी० एलेन की पीठ पर क्रान्तिकारी 'शिशिर कुमार गुहा ने गोली चलाई। 11 अप्रैल, 1908 ई० को चन्द्र नगर के फ्रेन्च मेयर, मर्सिये तर्दिवेल को बम से उड़ाने का प्रयास किया, क्योंकि उसने स्वदेशी आन्दोलन से सम्बन्धित सभा होने नहीं दी थी। 27 अप्रैल, 1908 को क्रान्तिकारियों ने मालदा हाईस्कूल में आग लगा दी, क्योंकि सम्बन्धित अधिकारियों ने छात्रों को स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेने से रोका था। मुजफ्फरपुर में 30 अप्रैल 1908 की रात में खुदीराम बास ने यूरोपियन क्लब के पास किंग्सफोर्ड के भ्रम में मिसेज व मिस केनेडी की कार पर बम बाजी की। यह बम खुदीराम बोस द्वारा फेंका गया था, कार में बैठी दोनों यूरोपियन महिलायें मौत की शिकार हुई।

मुजफ्फरपुर बम काण्ड के बाद सरकार ने क्रान्तिकारियों के दमन के लिए कठोर कारवाई की सरकार ने 2 मई को मुरारीपुर बागानबाड़ी पर छापा मारा, जहाँ तलाशी में बहुत से बम डाइनामाइट तथा चिट्ठियाँ पकड़ी गई। 34 आदमी पकड़े गये और इस षडयन्त्र का नाम अलीपुर षडयन्त्र रखा गया।

जहाँ इसके अतिरिक्त आग्नेयास्त्र, बम मैनुअल और बम का कारखाना मिला 34 आदमी पकड़े गये। जिनमें से एक अभियुक्त नरेन गोसाई मुखबिर बन गया, किन्तु अदालत में बयान होने से पहले ही दो क्रान्तिकारी नवयुवकों ने बड़ों से सलाह लिये बिना ही चोरी से जेल में पिस्तौल मंगा ली और मुखबिर का काम तमाम कर दिया। इन दोनों युवकों श्री कन्हाई लाल दत्ता तथा सत्येन्द्रचांकी को फांसी की सजा हुई।

मुरारीपुर बम मैनुअल की भांति नासिक षडयन्त्र में गणेश सावरकर के घर तलाशी में भी बम मैनुअल मिला, इससे संकेत मिलता है कि महाराष्ट्र और बंगाल के क्रान्तिकारियों के बीच घनिष्ट सम्पर्क था।

अस्तु नरमदलीय कांग्रेसियों की प्रतिकूलता और विदेशी शासन के दमनचक्र के बावजूद क्रान्तिकारी आन्दोलन के नेता ब्रिटिश शासन पर वार करते रहें, जिसमें सारा बंगाल ही नहीं, सारा भारत इन अलमस्तों के पीछे था। इस आन्दोलन का परिणाम था, कि दिसम्बर 1911 ई0 में सम्राट जार्ज पंचम ने भारत आकर बंग-भंग कर दिया। बंगाल फिर से एक हो गया। बंगाली जाति करीब-करीब बे रीढ़ की जाति थी, इन (इन क्रान्तिकारियों ने) लोहे की रीढ़ वालों ने उसे एक "रीढ़दार जाति" बना दिया।

क्रान्तिकारियों द्वारा धन-संग्रह के उपाय : श्री नलिनी किशोर गुहा के अनुसार, "किस प्रकार क्रान्तिकारी दल अपना खर्च चलाने के लिए धीरे-धीरे डकैती की ओर बढ़े, उन्हें ये प्रेरणा रूस के निहलिस्टों और आयरलैण्ड के क्रान्तिकारियों से मिली, जो अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए डकैती डालते थे।

डकैतियों के अतिरिक्त धन संग्रह के दूसरा उपाय काम में लाये गये। श्री गुहा के अनुसार "1910 में सोनार गाँव में प्रबोधदास गुप्त ने लगभग

दस-पन्द्रह हजार के जाली नोट चलाये अन्त में पकड़े गये। तीसरा उपाय इसके अतिरिक्त अलकीमिया से सोना 125 बनाकर आर्थिक समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। इससे स्पष्ट है कि क्रान्तिकारियों ने डकैती से बचने के लिए सब उपाय अपनायें, लेकिन इस सभी क्रान्तिकारी दलों ने बंगाल के बाहर भी डकैती का मार्ग अपनाया।

बर्हा डकैती : काकोरी डकैती की तरह ही वह डकैती भी मशहूर हुई इसका ब्यौरा "बांग्लार विप्लववाद" नामक पुस्तक से उद्धृत किया है। ढाका अनुशीलन समिति के नेता पुलिन बिहारी दास ने इस डकैती की योजना बनाई। योजना अनुसार 1908 के 2 जून सवेरे सवेरे दो नावें रवाना हुई, जिसमें 31 युवक, पूर्व निश्चित व्यवस्था के अनुसार, नये ढंग के कारतूसों दूर से मार करने वाले राइफलों, यथेष्ट कारतूस, तलवार व दूसरे अस्त्र-शस्त्र के साथ, बर्हा में निर्दिष्ट मकान पर पहुँचे। क्रान्तिकारियों ने इमारत घेर कर गोली चलाई मकान मालिक की तिजोरी से धन ग्रहण किया तथा चले गये।

पुलिस बहुत जोड़ तोड़ करने के बाद भी इस डकैती में भाग लेने वालो का पता नहीं पा सकी, क्योंकि असली कार्यकर्ता गिरफ्तार नहीं किया गये।

क्रान्किारियों द्वारा मुखबिरों की हत्यायें तथा सजायें जब क्रान्तिकारियों को अपने कार्यों में सफलता मिलने लगी, तब उनमें जोश आया। अब उन्हाने नरेन गोसाई की तरह दल त्यागी मुखबिरों के अतिरिक्त दूसरे लोगों को भी समय-समय पर सजा देने की ज़रूरत महसूस की। खुदीराम को गिरफ्तार कराने बाले नन्दलाल को इसी प्रकार सजा दी गई। क्रान्तिकारियों के पास अब केवल एक ही सजा थी प्राणघात इस प्रकार की हत्याओं में अनुशासन कायम रखना, दुष्ट का दमन करना तथा प्रतिहिंसा की भावनायें मिली जुली

रहती थी। क्रान्तिकारियों की काली सूची में आने के बाद किसी को छुटकारा नहीं था।

सिडीशन कमेटी के अनुसार, 1913 में कान्तिकारी कार्य बहुत जोरों से चलने लगा। 1916 में डिप्टी सुप्रिटेंडेण्ट बसन्त चटर्जी दिन दहाड़े मारा गया था। सी०आई०डी० मधुसूदन भट्टाचार्या को भी मेडिकल कालेज के सामने एक भीड़ में मार डाला गया। 1915 की 21 अक्टूबर को पुलिस इन्सपेक्टर सतीशचन्द्र बनर्जी पर उसके मस्जिदवाड़ी स्ट्रीट के घर पर आक्रमण हुआ, जिसमें सतीश चन्द्र बच गये, व दूसरा पुलिस अधिकारी मारा गया।

हेड कान्सटेबल हरिपद देव को कलकत्ता के कालेज स्केवयर मे लेक के किनारे पर तीन बंगाली नवयुवकों ने जान से मार दिया, यह हत्या बिलकुल भीड़ के अन्दर की गयी थी. कोई भी युवक पकड़ा न जा सका। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस कर्मचारी को इस लिए मार डाला गया कि उसने क्रान्तिकारियों का कुछ पता मालूम कर लिया था।

इस घटना के तुरन्त चौबीस घण्टे के अन्दर मैमन सिंह में इन्सपेक्टर बंकिमचन्द्र चौधरी के घर पर एक पिकरिक एसिड का बम डाला गया था, वह तुरन्त मर गया। रामदास नाम का एक आदमी पहले क्रान्तिकारी था, बाद में बसन्त चटर्जी के साथ मिलकर क्रान्तिकारियों का सर्वनाश करने लगा। 1914 की जुलाई मास में रामदास को ढाका के कारपोरेशन पार्क बकलैण्ड में मार डाला गया।

सिडिशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार, "बसन्त चटर्जी पर नवम्बर में उसके कलकत्ते वाले मुसलमान पाड़ा लेने वाले मकान में हमला कर दिया गया। इस अवसर पर पाँच क्रान्तिकारी माउजर पिस्तौल से लैस हो कर आये थे, उनकी योजना अनुसार बसन्त बाबू पर बम डालते ही पुलिस कप्तान टैंगर्ट और लोमन इत्यादि आयेंगे, तब दूसरी टोली उन पर हमला

करेगी, पर योजना का दूसरा अंश नगेन्द्र और काली को चोट लगने के कारण पूरा नहीं हो पाया।

अलीपुर षडयन्त्र के बाद जो सजायें दी गयी, उसमें कान्तिकारी षडयन्त्र कमेटी की रिपार्ट के अनुसार, 'अनुशीलन समिति' के अलावा उन्हीं दिनों कलकत्ता दल, मदारीपुर दल, "बारीसाल दल "उत्तर बंगदल तथा मैमनसिंह दल भी थे नलिनी बाबू ने लिखा है, "कि हर दल अपना क्षेत्र बढ़ाता जा रहा था, बाद में चन्द्रनगर दल ढाका अनुशीलन दल के साथ मिल गया था।"

पंजाब में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ : पंजाब तथा बंगाल भारत के दो विभिन्न सिरे हैं, फिर भी बंगाल तथा अन्य प्रान्तों में जो लहर चल रही थी, पंजाब उससे अछूता न रह सका। ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध असन्तोष यहाँ के जन-जीवन में भी उजागर हुआ। इबटसन ने अप्रैल 1907 के अन्त में पंजाब की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया-"पूर्व तथा पश्चिम पंजाब में ये विचार पढ़े लिखे लोगों में फैले हैं किन्तु मध्य प्रान्त में तो यह विचार हर श्रेणी में फैले हैं, लोगों में बड़ी बेचैनी है असन्तोष है, लाहौर से आन्दोलनकारी आकर अमृतसर और फिरोज़पुर में राजद्रोह का प्रचार करते रहें हैं।" फिरोजपुर में इसको काफी बड़ी सफलता मिली. जबकि अमृतसर में वे इतने सफल न रह सके।

ये रावलपिण्डी, स्यालकोट और लायलपुर में अंग्रेजी के विरूद्ध बड़े जोर शोर से प्रचार कार्य कर रहें हैं, लाहौर में इस प्रचार कार्य का कुछ कहना ही नहीं।

पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर डेनजिल इबटसन ने 1907 में एक रिपोर्ट दी, जिसमें लिखा, "कि नए विचारों का बड़े जोरों से प्रचार हो रहा है, उन्होंने समकालीन स्थिति का आंकलन करते हुए लिखा। उन्होंने अपनी

रिपोर्ट में यह भी लिखा कि दो जगह गोरा होने की वजह से उनका अपमान किया और एक जगह सम्पादक को सजा दी गई तो दंगा हो गया।"

एक तरफ शोषण जारी रहा दूसरी तरफ जरूरत पड़ने पर जल्दी से जल्दी फौज लाकर जनता को दबा देना चलता रहा, इस पर रेल के कुलियों ने हड़ताल की, उनके समर्थन में सभायें हुई।

इस पर इबटसन ने लिखा कि कुछ लोग यहाँ से अंग्रजों को विस्तर बंधवाना चाहते हैं और यदि इन लोगों को ही बंधवा दिया जाय, तो प्रजा के मन में फिर राजभक्ति की उमंगे लहराने लगेंगी, तद्नुसार बहुत गोताखोरी के बाद ब्रिटिश सरकार के कानूनों की किताब में दुढाई पड़ी समुद्र से 1818 का रेग्यूलेशन तीन नामक एक अस्त्र निकला, जिसके अन्तर्गत दो लोकप्रिय नेताओं लाल लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह को गिरफ्तार कर वर्मा निर्वासित कर दिया गया।

इनकी गिरफ्तारी से पंजाब का आक्रोश चरम सीमा पर पहुँच गया।

भारत सचिव मार्ले ने 6 जून 1907 को पार्लियामेण्ट में भाषण करते हुए कहा कि, पहली मार्च से पहली मई तक पंजाब में 28 सभायें हुई, जिसमें 5 का कृषि सम्बन्धी समस्याओं से ताल्लुक था शेष विशुद्ध राजनीतिक सभायें थी।

उपर्युक्त दोनों नेताओं की नजरबन्दी के बाद कुछ दिनों तक आन्दोलन ठप्प पड़ गया। छः महीने नजरबन्द रहने के बाद सरदार अजीत सिंह ईरान भाग गये। भाई परमानन्द पर मुकदमा चला, उनके पास वही बम मैनुअल निकला, जो अलीपुर षडयन्त्रकारियों के पास निकला, इसके अतिरिक्त लाला लाजपत राय के लिखे दो पत्र भी मिले, जो 1907 के तूफानी जमाने

में भेजे गये थे, जिसमें श्याम जी कृष्ण वर्मा से सहयोग दिलाने का आग्रह किया गया था।

इन सूत्रों से आभास मिलता है कि पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों के बीच अन्तर्प्रान्तीय सम्बन्ध था, भले ही वह बहुत योजनाबद्ध और घनिष्ठ न रहा हो।

उत्तर भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन : उस समय उत्तर भारत में असन्तोष की आग सुलग रही थी, किन्तु कोई क्रान्तिकारी संगठन नहीं था, यानि क्रान्तिकारी परिस्थितियों के होते हुए भी वे शक्तियाँ इतनी प्रबल नहीं थी, कि अपने अन्दर से वो कोई संगठन पैदा करें।

1908 में लाला हरदयाल ने दीनानाथ, जे०एन० चटर्जी, अमीर चन्द्र प्रभूति जैसे नौजवानों को एकत्रित कर एक दल बनाया, जब वे विदेश चले गयें, तब मास्टर अमीर चन्द्र इस दल के नेता बने तथा दल के लिए नये सदस्य भर्ती करते रहें इन लोगों का बंगाल के क्रान्तिकारियों से भी सम्बन्ध था. 1910 में अलीपुर षडयन्त्र के बाद यह सम्बन्ध टूट गया किन्तु रासबिहारी बोस, जिनका सम्बन्ध युगान्तर दल से था, उत्तर भारत आयें, तो उन्होंने मास्टर अमीर चन्द्र के दल से सम्पर्क किया, बंगाल के बाहर क्रान्तिकारी कार्यों के संगठन का दायित्व उन्हीं पर सौंपा गया था. रासबिहारी के आने से पहले यह संस्था केवल एक प्रचार कार्य की संस्था थी। उन्होंने उन्हें सक्रिय क्रान्तिकारी बनाया, बम बनाना सिखाया, "लिबर्टी" नामक उत्तेजक क्रान्तिकारी पर्चा बटवाया। 1912 में अवधबिहारी को संयुक्त प्रान्त और पंजाब में क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रमुख बनाया।

12 दिसम्बर 1911 ई0 में दिल्ली दरबार में जार्ज पंचम द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली घोषित की गई. इसी के साथ बंग विभाजन को भी रद्द कर दिया गया। नयी राजधानी में वायसराय लार्ड हार्डिंग्स के प्रवेश पर 23

दिसम्बर 1912 को विराट राजकीय जुलूस निकाला गया, क्रान्तिकारियों ने कार्यवाही के लिए उचित अवसर पाया।

क्रान्तिकारियों ने वायसराय की मन्दाधता को चूर करने के लिए पंजाब नेशनल बैंक की इमारत की दूसरी मंजिल से नारियल के समान एक वस्तु ऐरावत की अंबारी से टकराई तोप के समान विस्फोटक गड़गड़ाहट के साथ शोर मचा, यह लार्ड हार्डिंग्स पर फेंके गये बम का शोर था, लार्ड हार्डिंग्स वहीं बेहोश हो गये।

षडयन्त्रकारियों ने बाद में छात्रों के बीच पर्चा बांटा, जिसमें हमले की प्रशंसा की गई, उसमें लिखा था, "गीता, वेद, पुराण सभी बार-बार यही कहते हैं, कि मातृभूमि के दुश्मनों को चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, देश के हो मारना चाहिए।

सजायें :- बमकाण्ड के सम्बन्ध में सरकार ने 13 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया, जिसमें दीनानाथ और सुल्तान चन्द्र मुखबिर हो गये किन्तु बम काण्ड की पूरी जानकारी उन्हें भी नहीं थी। मुकदमा चलाकर अमीर चन्द्र, अवध बिहारी, बालमुकुन्द, बसन्तकुमार विश्वास को फांसी की सजा दी गई।

अन्ततः 11 मई 1915 को अम्बाला जेल में चारों को फांसी हो गई। वास्तव में बसन्त कुमार विश्वास ने वायसराय पर बम फेंका था तथा रास बिहरी बोस इस योजना के मस्तिष्क थे।

क्रान्तिकारियों का केन्द्र - "बनारस" : उत्तर प्रदेश शचीन्द्र नाथ सन्याल और रास बिहारी बोस का भी कार्यक्षेत्र रहा। बनारस का क्रान्तिकारी केन्द्र बंगाल, बिहार, मध्यप्रान्त और पंजाब तक को शक्ति देता रहा था। 'रिवोल्यूशनरी' नामक पर्चा एक साथ सारे देश में बांटा गया था।

शचीन्द्र नाथ सन्याल, रासबिहारी बोस तथा पार्टी के अन्य सदस्य, क्रान्तिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाने तथा सैनिक क्रान्ति करके देश को स्वाधीन बनाने की आवश्यकता महसूस करने लगे। दूसरी तरफ गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों को भारत के क्रान्तिकारी (बंगाल के) कार्यवाही की जानकारी थी। वे भी देश में संघर्षरत क्रान्तिकारियों के अनुभवों का लाभ उठाकर उनके सहयोग व मदद से सैनिक क्रान्ति करना चाहते थे।

भारत में क्रान्ति के उद्देश्य से नवम्बर 1914 में गदरपार्टी के अग्रदूत विष्णु गणेश पिंगले, रास बिहारी बोस से मिलने आये पिंगले ने बोस से कहा कि, "गदर करने के उद्देश्य से चार हजार व्यक्ति अमरीका से भारत आये हैं और बीस हजार लोग विद्रोह शुरू हो जाने पर भारत आयेंगे।

गदरपार्टी के क्रान्तिकारी तथा शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा उसके साथी वैचारिक तथा क्रान्ति की रणनीति की दृष्टि से 1857 को भारतीय स्वाधीनता संग्राम तथा फ्रांस की क्रान्ति से काफी प्रभावित थे। इनका ख्याल था कि भारत में सैनिक क्रान्ति का उपर्युक्त समय युद्ध के दौरान ही है। वे स्वतन्त्रता प्राप्त करने का लक्ष्य सैनिक विद्रोह के माध्यम से क्रान्ति की योजना बनाकर चल रहे थे।

गदरपार्टी के लोगों तथा शचीन्द्र के साथियों ने पंजाब, संयुक्त प्रान्त, बिहार, राजपूताना, मध्य प्रदेश, बंगाल तक की छावनियों में सम्पर्क करके विद्रोह का प्रयास किया। इन्होंने भारत की सब छावनियों में गोरों की संख्या, उनके अस्त्र-शस्त्र के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली थी।

रास बिहारी बोस से सलाह करके निर्णय लिया गया कि बंगाल को पंजाब के विद्रोह की सूचना शीघ्र देनी चाहिए। इसी उद्देश्य से शचीन्द्र नाथ सान्याल बंगाल गये तथा केन्द्र के नेताओं के पास जाकर पंजाब का सारा समाचार विस्तार के साथ सुनाया। इसी अवधि में गदर पार्टी के

क्रान्तिकारी पिंगले कलकत्ता के क्रान्तिकारी दलों के लोगों से मिले तथा बम गोले मांगे। शीघ्र ही पंजाब के विप्लव की तैयारी की बात पूरे कलकत्ता में फैल गयी। शचीन्द्र से प्रभावित होकर पिंगले शचीन्द्र के दल में शामिल होकर बनारस आ गये।

यहाँ कलकत्ता के प्रसिद्ध नेता यतीन्द्र नाथ दास के प्रयास से क्रान्तिकारियों के कई छोटे-छोटे दल एक हो गये थे, यह काम उसी दिन सम्भव हुआ, जिस दिन पंजाब में गदर होने की तैयारी के समाचार से एक नये काम की प्रेरणा ने उन्हें उतावला कर दिया था। बंगाल में इस समय विद्रोह करने वाले दो ही दल थे। एक के प्रधान यतीन्द्र नाथ थे तथा दूसरे दल के दो भाग थे। एक भाग बंगाल के भीतर काम करता था, दूसरा भाग बंगाल के बाहर रास बिहारी के नेतृत्व में विद्रोह के पूर्व उत्तर भारत के सभी क्रान्तिकारी दलों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया गया।

"विप्लव की जो आग, एक दिन सिर्फ बंगाल के एक प्रान्त के ही सीमा के भीतर थी, उसी की अग्निशिखा सोलह-सत्रह वर्ष की दमन नीति का ईंधन पाकर रावलपिण्डी और पेशावर तक फैल गयी थी।"

क्रान्तिकारियों की विद्रोह योजना "लाहौर षडयन्त्र" : क्रान्तिकारियों की योजना के बारे में शचीन्द्र नाथ सान्याल लिखते है कि, "क्रान्तिकारी चाहते थे कि एक दिन एकाएक उत्तर भारत की छावनियों में तमाम अँग्रेज सैनिकों पर, एक ही दिन एक ही समय पर हमला कर दिया जाए और तूफानी वातावरण में जो लोग उनकी कैद में आ जाए, उन्हें कैद कर लिया जाए। विद्रोह रात में शुरू किया जाए तथा शहर के तार इत्यादि काटकर, वरिष्ठ पुलिस को कैद में डाल दिया जाए तथा खजाना लूटकर जेल से कैदी रिहा कर दिये जाएं।"

इसी बीच पंजाब से बनारस आये कुछ क्रान्तिकारी साथियों ने शचीन्द्र के दल को बताया कि विप्लव का दिन 21 फरवरी 1915 की रात निश्चय किया गया है। शचीन्द्र और उनके साथ शनिवार की शाम तक बनारस छावनी में आ गये थे। इसी बीच विप्लव की तिथि 19 फरवरी कर दी गयी, जिसकी जानकारी बनारस के क्रान्तिकारियों को नहीं थी. इसलिए लाहौर में भण्डा फूट चुका था बहुत सी गिरफ्तारियां हो चुकी थीं रासबिहारी बनारस लौट आयें। 23 मार्च को पिंगले 10 बम के साथ 99 समेत 12 नं इण्डियन कैवलरी की छावनी में पकड़े गये।

गिरफ्तारियां :- देशद्रोही कृपाल सिंह ने सारी योजनायें पंजाब पुलिस को बता दी थी। बड़ी जोर-शोर से गिरफ्तारियाँ होने लगी, कई पलटनों के हथियार छीन लिए गये। इसी केस को प्रथम 'लाहौर षडयन्त्र' कहा जाता है जिसमें 61 व्यक्तियों पर मुकदमे चले। जिसमें करतार सिंह, जगत सिंह प० परमानन्द मान सिंह, उधम सिंह आदि 24 व्यक्तियों को फांसी दी गयी तथा अनेकों को काले पानी की सजा दी गयी।

बाद में शचीन्द्र नाथ सान्याल, गिरजाबाबू तथा दूसरे षड्यन्त्रकारी भी पकड़े गये, भारत रक्षा कानून के तहत इन पर मुकदमा चला, शचीन्द्र को साढ़े बाइस वर्ष की सजा हुई। बनारस षडयन्त्र केस में विभूति मुखबिर हो गये।

विदेशों में भारतीय स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन गदर पार्टी का योगदानः प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान : लाला हरदयाल ने अमेरिका में 10 मई, 1913 को कैलीफोर्निया के यूलो नामक नगर में गदर कराने की दृष्टि से गदरपार्टी की स्थापना की। इस पार्टी ने गदर नामक पत्र निकाला, यह पत्र भारत के अतिरिक्त चीन, जापान, सिंगापुर, जर्मनी, फ्रांस, इग्लैण्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका, वर्मा, कनाडा, इत्यादि देशों में पढ़ा जाता था, इस पत्र में क्रान्ति

व भारतीय स्वतन्त्रता का खूब प्रचार रहता था रास बिहारी बोस जापान से भारतीय स्वतन्त्रता का प्रचार कर रहे थे। पहले अमेरिका में गदर पार्टी ने बाद में इण्डिया लीग ने, 161 भारतीय स्वतन्त्रता के लिए महान् कार्य किये।

लाला हरदयाल जर्मनी गये तथा वहाँ के सम्राट विलियम द्वितीय कैंसर से साँठ गाँठ करके एक योजना बनाई। इन्हीं दिनों लाला हरदयाल की प्रेरणा से काबुल में राजा महेन्द्र प्रताप ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए एक अस्थाई सरकार बनाई। यह तय हुआ कि जर्मनी तुर्की की सहायता से अरब ईरान, ईराक, अफगानिस्तान के मुसलमान, विद्रोह कर दें तथा पंजाब में सिक्ख उनका साथ दें। 21 फरवरी के विप्लव के लिए सैकड़ों क्रान्तिकारी तथा गोलाबारूद भारत भेजा। उस समय जबकि अंग्रेज कमजोर हो गये थे। वे युद्ध जर्मनी से हार रहे थे। यदि योजना सफल हो जाती तो भारत बहुत पहले स्वतन्त्र हो गया होता, लेकिन एक देश द्रोही कृपाल सिंह द्वारा इतनी विशाल योजना नष्ट कर दी गयी।

रौलट एक्ट 1919 और असहयोग आन्दोलन : 1919 ई में रौलट एक्ट पास किया गया। इसके अनुसार भाषण देने की स्वतन्त्रता पर रोक लगाई गई थी। इसलिए महात्मागांधी तथा अनेक नेताओं ने इसका विरोध किया अनेक स्थानों पर इन कानूनों के विरूद्ध सभा की गयी। जब अमृतसर में ऐसी सभायें हो रही थी ऐसी ही एक सभा अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हो रही थी तो पंजाब के गवर्नर जनरल ओडवायर के आदेश से जनरल डायर ने निहत्थी जनता पर गोली चला दी। गोली चलाने से सैकड़ों व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी तथा असंख्य घायल हो गये। इस अत्याचार का महात्मा गांधी ने देशव्यापी विरोध किया और स्वराज्य प्राप्ति के लिए 1920 ई० में असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह किया।

जब असहयोग आन्दोलन चला, तो महात्मागांधी ने अहिंसा पर बहुत बल दिया था। क्रान्तिकारियों ने भी इस आन्दोलन का फल देखने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपना आन्दोलन स्थगित कर दिया था, परन्तु जब उन्होंने देखा कि सरकार अहिंसात्मक आन्दोलन की कोई परवाह नहीं करती तथा गांधी जी द्वारा दिये गये वचनानुसार, "स्वराज्य जब एक वर्ष में नहीं मिला, तो क्रान्तिकारियों को पुनः शस्त्र उठाना पड़ा।

क्रान्तिकारियों में आतंकवाद के प्रति आकर्षण : उसी के विरोध में क्रान्ति की नई धारा निकली। पुनः क्रान्तिकारी दलों को संगठित किया गया। शचीन्द्र सान्याल 20 फरवरी 1920 को आम माफी के सिलसिले में छोड़ दिये गये थे। असहयोग के ठप्प हो जाने से जो प्रतिक्रिया का दौर दौरा हुआ उसके दलदल में सभी फंस गये। कुछ सुधार विधानवादी बिखरे हुए कान्तिकारी दल फिर से संगठित होने लगे। कुछ पुराने क्रान्तिकारियों की जगह नये क्रान्तिकारियों ने ले ली थी। इन नयों में जोश था, बलबला था, उमंग थी, किन्तु परिपक्वता नहीं थी।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कान्तिकारी आन्दोलन में वैचारिक परिवर्तन के साथ-साथ उसकी कार्य-विधियों में नया उभार आया। इन कार्यवाहियों में जनता में साम्राज्य विरोधी चेतना उत्पन्न हुई। बंगाल के क्रान्तिकारियों तथा गदर के क्रान्तिकारियों ने 1910 और 1920 वाले दशकों में डाके डाले। 1922 के बाद बंगाल, संयुक्त प्रान्त व पंजाब के शिक्षित नवयुवकों में क्रान्तिकारी आतंकवाद की कार्यप्रणाली के प्रति आकर्षण की भावना पुनः उत्पन्न होने लगी।

मैनपुरी षडयन्त्र : गेंदालाल दिक्षित ने यू०पी० में बारह जिलों के कलक्टरों को एक ही साथ मार डालने की योजना बनाई, इसके लिए शिवाजी समिति बनाई, जिसका उद्देश्य अमीरों को लूट कर शिक्षा का प्रचार करने

के साथ-साथ अस्त्र शस्त्र संग्रह करना था। इसके तहत उनका लक्ष्य हरदोई जिले की धनी विधवा के घर डाका डालना था, लेकिन हिन्दू सिंह नामक व्यक्ति द्वारा भेद खुल जाने पर दीक्षित सहित 80 साथियों की ग्वालियर के एक जंगल में पुलिसों से मुठभेड़ हुई 35 व्यक्ति मारे गये, अन्यों को ग्वालियर किले में बन्द कर दिया गया। बाद में मैनपुरी षडयन्त्र केस में कई व्यक्तियों को सजायें दी गयी।

बमरौली डाका : शाहजहाँपुर के क्रान्तिकारियों ने "बमरौली" में भी डाका डाला। इसमें बनारस से चन्द्रशेखर आजाद, रामकृष्ण खत्री, मन्मथ नाथ गुप्त शचीन्द्र नाथ बख्शी पहुँचे। 9 मार्च 1923 को 'बिचपुरी में भी डाका डाला क्रान्तिकारी इसे एक्शन कहते थे। 24 मई 1925 को द्वारिकापुर (प्रतापगढ़ के सेठ) के यहाँ डाका डाला गया। अशफाक उल्ला भी इसमें शामिल थे।

1923 1924 में बंगाल में आतंकवादी पुनः सिर उठाने लगे 3 अगस्त 1923 को कुछ क्रान्तिकारियों ने शंखारी टोला पोस्ट आफिस पर रूपये प्राप्त करने के उद्देश्य से हमला कर दिया, किन्तु वे वहाँ जाकर इतना घबडाये कि पोस्ट मास्टर को मार कर चल दिये। अलीपुर केस चला इसमें नरेन्द्र नामक युवक को फांसी दी गयी। अन्य को 1818 के तीसरे रेग्यूलेशन के तहत नजरबन्द कर दिया।

दिसम्बर 1923 में चटगाँव में एक क्रान्तिकारी डाका डाला गया। 18000 रू० क्रान्तिकारियों के हाथ लगा, दरोगा गोली से मार डाला गया। 1924 में गोपी मोहन साहा ने पुलिस कमिश्नर 'टेंगार्ड' की हत्या करने की ठान ली थी, परन्तु गलती से 'अंग्रेज डे' की हत्या कर दी। इसमें साहा को फांसी हुई।

जुलाई 1924 में 'लाल बंगाल नामक पर्चा निकाला गया, जिसमें लिखा गया था, दमन करने वाले अफसरों का सफाया कर दो। कई अन्य एक्शन हुए। 1924 अप्रैल में मि० ब्रूस की हत्या करने का प्रयत्न किया गया। सरकार ने घबराकर 25 अक्टूबर 1925 को 'बंगाल अध्यादेश निकाला, जिसके अन्तर्गत कलकत्ते के साठ मकानों पर छापा डाला गया। सुभाष चन्द्र बोस, जिनका कान्तिकारियों से गुप्त सम्बन्ध था, गिरफ्तार किये गये। किन्तु क्रान्तिकारी आन्दोलन दबने की बजाय बढ़ता गया।

पंजाब में जन आन्दोलन : महायुद्ध के बाद, वास्तव में पंजाब में जन विद्रोह गहराया जो व्यापकता की दृष्टि से 1921 1922 के बीच हुई सारी उथल-पुथल से ज्यादा कान्तिकारी था। जलियाँवाला बाग नरसंहार अंग्रेजों द्वारा ढाये गये जुल्मों का भीषण उदाहरण है। आम जनता पर विमानों से बमबारी हुई, उन दिनों पंजाब की समस्त जनता ने विद्रोह कर दिया था। 1919 1921 के बीच पंजाब के मजदूर कारीगर शहरों के मध्यम वर्गीय किसानों, नौजवानों ने प्रदर्शन तथा हड़तालों में भाग लिया, कान्तिकारियों ने सरकारी कार्यालयों पर धावा बोला। उन दिनों मजदूरों ने जो नारे लगाये, उससे स्पष्ट था कि उन पर अक्टूबर क्रान्ति का प्रभाव था, उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के लाल भण्डे को अपना झण्डा बनाया। नारे लगाये "दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ" "साम्राज्य वादी, पूँजीवाद, का नाश हो", "रूसी कान्ति जिन्दाबाद" ये नारे 1925 के बाद अधिक लोकप्रिय हुए।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का बदलता स्वरूप, मार्क्स का प्रभाव : शचीन्द्र नाथ सान्याल भी यह समझने लगे थे कि कान्तिकारियों के लिए केवल अधिक संख्या में जेल जाना ही पर्याप्त नहीं है, उनके काम से जनता में पर्याप्त जागृति होनी चाहिए। निः संदेह शचीन्द्र की समझ कान्तिकारी

समितियों की गोपनीय गतिविधियों और इक्की दुक्की बमों, पिस्तौलों की कार्यवाहियों की रणनीति से आगे बढ़ चुकी थी।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना : असहयोग की असफलता के बाद युवकों में अजीब बेचैनी थी। श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल ने इस बेचैनी का फायदा उठाकर उत्तर भारत में फिर से कान्तिकारी आन्दोलन चाहा। अण्डमान से वापस आते ही सान्याल उत्तर भारत में कान्तिकारी दल के पुनर्गठन के सम्बन्ध में कुछ नगरों में गये। दूसरी तरफ बंगाल के अनुशीलन समिति के क्षेत्रासिंह बनारस में कल्याण आश्रम के माध्यम से कान्तिकारी कार्य करते रहें। बहुत दिनों के बाद दोनों दलों के मिलने से उत्तर भारत में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' नामक कान्तिकारी संगठन बना। इसके प्रमुख नेता थे सुरेश चक्रवर्ती, राम प्रसाद बिस्मिल विष्णु शरण दुबलिस, राजेन्द्र लाहिडी, रौशन सिंह, आशफाक उल्ला यतीन्द्र नाथ दास राम दुलारे द्विवेदी, मणीन्द्र नाथ बनर्जी, रमेश गुप्त, मनमोहन गुप्त आदि। इस दल का एक विधान तैयार किया गया, जिसे पीला कागज बतलाया गया। इस दल का उद्देश्य सशस्त्र तथा संगठित कान्ति के द्वारा Federated republic of united states of India भारत के सम्मिलित राज्यों का प्रजातन्त्र संघ स्थापित करना था। जनवरी 1925 'दी रिवोल्यूशनरी' बहुत ही गुप्त रूप से पूरी सफलता के साथ बाँटा गया। इसमें लिखा था, "हमारे सामने आधुनिक रूस का आदर्श है प्राचीन ऋषियों का आदर्श हमारे सम्मुख है।"

कान्तिकारी दल का कार्यक्रम प्रारम्भ से अन्त तक एक ही रहा, फिर भी उसके आदर्श व ध्येय का समय-समय पर विकास होता रहा।

काकोरी डकैती : 1920 वाले दशक के मध्य तक आते-आते, पार्टी को शस्त्र एकत्र करने, क्रान्तिकारी साहित्य का प्रचार करने तथा सदस्यों के

खर्च के लिए धन की आवश्यकता पड़ने लगी। इसमें क्रान्तिकारियों ने गाँवों में डाके डालने के बजाय सीधे सरकार के धन लूटने की योजना बनाई तथा सरकार की सत्ता व शक्ति को चुनौती दी थी इस एक्शन से क्रान्तिकारी आन्दोलन के नये दौर का प्रारम्भ किया।

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना : इस अवधि तक हि० रि० ए० के सदस्यों में समाजवादी विचारधारा फैल रही थी। क्रान्तिकारियों का वैचारिक विकास हो रहा था। भगत सिंह ने क्रान्तिकारी आन्दोलन का लक्ष्य समाजवाद की ओर मोड़ने तथा हि०रि०ए० में 'समाजवाद' शब्द जोड़ने का निश्चय किया, तद्नुसार दल का नाम "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" रखा गया। यह परिवर्तन सूचित करता है कि दल के ध्येय में और अधिक विकास होता रहे।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का लक्ष्य-जन आन्दोलन : भगत सिंह ने क्रान्तिकारी आन्दोलन का लक्ष्य समाजवाद की ओर मोडकर पहली बार इसे जन आन्दोलन से जोड़ दिया। पहले क्रान्तिकारी हँसते हँसते फांसी के फन्दों को चूम लेते थे, लोग उनके साहस की प्रशंसा तो करते थे। लेकिन आन्दोलन आम जनता की समस्याओं से नहीं जुड़ पाता था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने देश की उस समय की स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए दृढ़तापूर्वक अपना कदम आगे बढ़ाया।

भगतसिंह अपने आपको आतंकवादी नहीं, क्रान्तिकारी मानते थे तथा सरकार के आतंक का जवाब जान हथेली पर रखकर देना चाहते थे तथा यह साबित करना चाहते थे कि भारत राष्ट्र नपुंसक नहीं हो गया है, हमारी रगों में भी खून बहता है। हम देश की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर कर सकते हैं।

भारत छोड़ो आन्दोलन-1942 : जिन दिनों सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज के द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता के लिए युद्ध जारी था तभी भारत में गाँधी जी के नेतृत्व में 1942, 8 अगस्त 'भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया गया था जो वास्तव में भारत का जन-आन्दोलन था, जिसमें देश के सभी राज्यों, जातियों, विचारों के लोगों द्वारा आन्दोलन में भाग लिया गया था। गांधी जी ने अपने विचारों को "हरिजन' नामक समाचार पत्र में प्रकाशित करना शुरू किया। इसलिए अब वे भारत की आजादी के लिए सरकार के सामने घुटने टेकने के पक्ष में नहीं थे, अपितु वे अपने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही के पक्ष में थे।

ब्रिटिश सरकार ने 9 अगस्त, 1942 ई० को रात्रि के समय गाँधी जी तथा कांग्रेस की कार्य समिति के सब नेताओं को बम्बई में गिरफ्तार कर लिया तथा उनको अज्ञात स्थान पर भेज दिया। सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिए बहुत अत्याचार ढाये। नेतृत्वहीन जनता यह नहीं जानती थी कि क्या किया जाए। कांग्रेसी नेताओं ने जनता के लिए कोई (Instruction) हिदायत नहीं छोड़ी थी। महात्मा गाँधी ने जनता को "करो या मरो" का मन्त्र दिया था, यह कहा था कि, "यह उनके जीवन का अन्तिम संघर्ष होगा।" ऐसी दशा में भारतीय कॉग्रेस कमेटी की तरफ से पुस्तिका प्रकाशित की गई, जिसमें 12 सूत्री कार्यक्रम दिया गया था। इसमें अहिंसात्मक कार्यवाही पर विशेष बल दिया गया था।

भारत छोड़ो आन्दोलन चार अवस्थाओं से होकर गुजरा। पहली अवस्था महात्मा गाँधी की 9 अगस्त 1942 की गिरफ्तारी, हडताल, प्रदर्शनी, जुलूस, जलसे हुए दूसरी अवस्था में सरकारी भवनों, इमारतों, सम्पत्ति, रेलवे स्टेशनों, डाकखानों, थानों पर आक्रमण किये गये, आग लगाई गई। आन्दोलन को सेना की सहायता से दबाने का यत्न किया गया। सितम्बर 1942 के मध्य आन्दोलन की तीसरी अवस्था शुरू हुई। पुलिस और सेना

के अत्याचारों से क्षुब्ध होकर मद्रास और बंगाल में विभिन्न स्थानों पर बम भी फेंका गया यह आन्दोलन फरवरी 1943 तक चला। आन्दोलन की चौथी अवस्था में गति बहुत धीमी हो गई, जो कि 9 मई, 1943 तक चला। गांधी जी छोड़ दिये गये। इस अवस्था में तिलक दिवस और स्वतन्त्रता दिवस मनाये गये।

यह आन्दोलन महात्मा गांधी के द्वारा अवश्य चलाया गया, परन्तु यह कोई साधारण आन्दोलन नहीं था. इसे पूर्णतः अहिंसात्मक आन्दोलन नहीं कहा जा सकता, आवश्यकता पड़ने पर जनता द्वारा इसे हिंसक बनाया गया। इसमें सेना को 6 बार मशीनगनें चलानी पड़ी। पुलिस और सेना ने इसे दबाने के लिए 538 बार गोलियाँ चलाई। कम से कम 7000 व्यक्ति मारे गये। गैर सरकारी सूत्रों के अनुसार 10,000 से 40,000 व्यक्तियों को कैद में डाला गया गांधी जी ने इसका विरोध नहीं किया।

1942 के आन्दोलन ने अंग्रेजों को भलीभांति सिद्ध कर दिया कि उनका राज्य यहाँ पर कोई नहीं चाहता। अतः भारतीय जनता और सेना इतनी जाग चुकी थी कि ब्रिटिश सेना द्वारा उसको गुलाम नहीं रखा जा सकता था। इसलिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली द्वारा यह घोषणा की गयी की, "अंग्रेज भारत को छोड़ जायेंगें और भारत को स्वतन्त्रता दे दी जायेगी।

संदर्भ सूची :

1. यू०एस०एम० पत्रिका जुलाई, अगस्त, 1998 पृष्ठ-18
2. घोष, काली चरण, द रोल ऑफ आनर (कलकत्ता, 1965) पृष्ठ 63
3. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर भारत में सशस्त्र क्रान्ति की भूमिका' (मीरजापुर, 1972) प्रकाशन क्रान्तिकारी प्रकाशन, मीरजापुर, पृ० 13
4. वही 40-15-16
5. गुप्त, मन्मथ नाथ, भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास पृष्ठ-2
6. जगेश, जगदीश, कलम आज उनकी जाय बोल प्रकाशकः प्रचार ग्रन्थावली परियोजना, हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन वाराणसी, 1989, पृ०-5
7. वही
8. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर, पूर्व उद्धृत पृ० 37
9. गुप्त मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ०- 3
10. पत्रक (ओ शहीद), दस्तावेज संख्या 19/1908, गृह विभाग, राजनीतिक, भारत सरकार
11. घोष, काली चरण, द रोल ऑफ ऑनर, पृ० 16
12. दस्तावेज संख्या, 19/1908 गृह विभाग (राजनीतिक) भारत सरकार
13. दस्तावेज संख्या 19/1908 गृह विभाग (राज०) भारत सरकार
14. यू० एस० एस० एम०. पत्रिका 98/18
15. अग्रवाल, आर०सी०. भारत का संवैधानिक विकास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन 2000 एस चन्द्र एण्ड कम्पनी, पृ० 65
16. अग्रवाल, आर० सी० पूर्व उद्धृत पृ० 77
17. प्रसाद, डा० राजेन्द्र, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, प्रकाशक : विश्व विद्यालय प्रकाशनः चौक, वाराणसी प्रथम संस्करण 1998, पृ०- 27
18. अलंकार, डा० सत्यकेंतु " आर्यसमाज का इतिहास" (प्रथम भाग) प्रथम संस्करण, दिल्ली, 90 163 164
19. अग्रवाल, डा० आर०सी० पूर्व उद्धृत-पृ०-81

20. सरस्वती दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश' (बहाल गढ़, 1975) समुल्लास-13
21. आर्यमित्र 5 मई 12 मई 202 पृ0-5
22. आर्य समाज, हरदोई स्थापना शताब्दी स्मारिका, पृ०- 25
23. वही पृ0-25
24. वही, पृ0-85
25. विद्यालंकार, सत्यकेतु "आर्यसमाज का इतिहास प्रथम भाग, पृ०- 245
26. वर्मा, विश्वनाथ प्रताप "आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन (आगरा) 1975 पृ0-33
27. अग्रवाल, आर०सी० पूर्व उद्धृत पृ०-84
28. दीक्षित, चन्द्रोदय, स्वतन्त्रता, संघर्ष व उपलब्धि प्रकाशक निदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग जून, 1988, पृ०-7-8
29. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ०- 9-10
30. वही
31. अग्रवाल, आर०सी० पूर्व उद्धृत पृ० 132
32. अग्रवाल, आर०सी० पूर्व उद्धृत पृ० 133 134
33. वही.
34. जोशी, वी० एस० "बासुदेव बलवन्त फडके"
35. अग्रवाल, आर०सी० पूर्व उद्धृत पृ० 133-134
36. गुहा, अरूण चन्द्र, फर्स्ट स्पार्क आफ रेवोल्यूशन (दिल्ली. 1971), पृ०-267
37. सेन, एस०पी० (स) डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी' (कलकत्ता, 1974), पृ०-352
38. बी० एस० जोशी, पूर्व उद्धृत पृ० 187
39. प्रसाद, राजेन्द्र, "भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, पृ० 37
40. अग्रवाल, आर०सी० पूर्व उद्धृत पृ० 110
41. प्रसाद, राजेन्द्र, पूर्व उद्धृत पृ० 44
42. वही.

43. जोशी, बी०एस० बाबा साहेब फड़के का सस्मरण" द्वारा उमानाई फडके उद्धृत 'बासुदेव बलवन्त फडको पृ०-41
44. घोष, काली चरण, द रोल ऑफ ऑनर (कलकत्ता 1965), पृ०- 35
45. उपाध्याय, डा० विश्वामित्र, पूर्व उद्धृत पृ० 310-311
46. अग्रवाल, डा० आर०सी०, पूर्व उद्धृत पृ०- 137
47. वही 90-135
48. वही 95 यही. .90- 138
49. वही
50. सावरकर, वीर, पूर्व उद्धृत पृ०- 70
51. वही, पृ0-71
52. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 33
53. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर भारत में सशस्त्र क्रान्ति की भूमिका (मीरजापुर, 1972) पृ०- 85-87
54. वही
55. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत पृ० 44
56. गुहा, अरूण चन्द्र, पूर्व उद्धृत पृ० 108
57. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत पृ० 108
58. चक्रवर्ती, तारिणीशंकर, पूर्व उद्धृत पृ० 130-131
59. वही
60. गुहा, अरूण चन्द्र पूर्व उद्धृत पृ० 102
61. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर "पूर्व उद्धृत, पृ० 122
62. सिडिशन कमिटी 1918 रिपोर्ट, चैप्टर 2. क्लाज 24 पृ0-17
63. चक्रवर्ती, तारिणीशंकर, "भारत में सशस्त्र क्रान्ति की भूमिका मीरजापुर 1972. पृ0-114
64. चक्रवर्ती, तारिणीशंकर, पूर्व उद्धृत", पृ०- 114
65. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 18
66. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 115
67. उपाध्याय, विश्वनाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 50

68. गुप्त, मन्मथ नाथ पूर्व उद्धृत पृ० 50
69. वही
70. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर "पूर्व उद्धृत पृ0-231
71. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत" पृ0-231
72. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत पृ०- 56
73. वही
74. वही
75. गुप्त, मन्मथ नाथ पूर्व उद्धृत' पृ0-63
76. गुप्त, मन्मथ नाथ पूर्व उद्धृत पृ०-64
77. वही
78. वही
79. शचीन्द्र नाथ बन्दी जीवन (इलाहाबाद 1992) पृ0-67-94 सान्याल
80. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 70-71
81. अग्रवाल, आर०सी० "पूर्व उद्धृत" पृ०-142
82. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 73
83. घोष कालीचरण "पूर्व उद्धृत कलकत्ता 1965, पृ०-238
84. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ० 3
85. अग्रवाल, आर० सी० पूर्व उद्धृत, पृ०-144
86. वही
87. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर "पूर्व उद्धृत पृ०- 263
88. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत" पृ०- 222
89. गुप्त, मन्मथ नाथ, विदेशों में प्रवासी क्रान्तिकारी, पृ०- 236
90. "भारत का स्वतन्त्रता संग्राम", पृ०- 236
91. गुप्त, मन्मथ नाथ, "विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृ० 236
92. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत पृ०-222/ "विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृ0-287
93. गुप्त, मन्मथ नाथ, पूर्व उद्धृत पृ०- 223-224
94. गुप्त, मन्मथ नाथ, विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृ०- 237

95. सान्याल, शचीन्द्र नाथ, पूर्व उद्धृत पृ0-137
96. सान्याल, शचीन्द्र नाथ, "पूर्व उद्धृत पृ० 153
97. गुप्त मन्मथ नाथ, क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास, पृ० 109
98. गुप्त, मन्मथ नाथ, "पूर्व उद्धृत' पृ०-239
99. वही
100. शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर "भारतीय आतंकवाद का इतिहास, पृष्ठ-344-345
101. सान्याल, जीतेन्द्र नाथ, सरदार भगत सिंह, पृष्ठ 18
102. गुप्त, मन्मथ नाथ क्रा० आन्दोलन का वैचारिक इतिहास, पृष्ठ-126
103. प्रसाद, डा0 अम्बा, द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1942 पेज-120
104. वही, पृष्ठ-121

105.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
और
क्रांतिकारी गतिविधियां

World Academic Press
Kolkata, India
www.worldacademic.press

WORLD
ACADEMIC PRESS

9 788168 686182